ओ३म्

ऋग्वेद यजुर्वेद

वेद विज्ञान मार्ग का पथिक

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

सामवेद अथर्ववेद

प्रत्येक वेदभक्त, देशभक्त, मानवतावादी एवं विज्ञान प्रेमी के हृदय, मस्तिष्क एवं आत्मा तक को झंकृत करने वाला महत्वपूर्ण लेख

मूल्य- पाठक स्वयं विचारें।

ओ३म्

वेद विज्ञान मार्ग का पथिक

लेखक

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

प्रथम संस्करण
दो हजार प्रतियाँ

महाशिवरात्रि, महर्षि दयानन्द बोध दिवस
फा.कृ.१४/२०७०, गुरुवार (27 फरवरी 2014)

प्रकाशक

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)
वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम
भीनमाल, जिला–जालोर
(राजस्थान) पिन– ३४३०२६
Website : www.vaidicscience.com
E-mail : swamiagnivrat@gmail.com

<u>वेद विज्ञान मार्ग का पथिक</u>

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने अपनी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'वेद विषयक विचार' नामक अध्याय में लिखा है- "वेदेषु द्वे विद्ये वर्त्तेते, अपरा परा चेति। तत्र यया पृथिवी-तृणमारभ्य प्रकृति-पर्यन्तानां पदार्थानां ज्ञानेन यथावदुपकारग्रहणं क्रियते सा अपरोच्यते। यया चादृश्यादिविशेषणयुक्तं सर्वशक्तिमद् ब्रह्म विज्ञायते, सा परा" इसका तात्पर्य है कि वेदों में दो प्रकार की विद्यायें हैं। १. अपरा अर्थात् पृथिवी से लेकर प्रकृति पर्यन्त सभी जड़ पदार्थों का यथावत् ज्ञान करके उससे उपकार लेना। २. परा अर्थात् ब्रह्म वा आत्म विद्या।

महर्षि अपरा विद्या अर्थात् पदार्थ विज्ञान (Physical Science) की अपेक्षा परा विद्या अर्थात् अध्यात्म विज्ञान को अत्यन्त श्रेष्ठ मानते हुए भी **परा अर्थात् अध्यात्म विज्ञान को पदार्थ विज्ञान का फल ही मानते हैं।** योग विद्या के सबसे प्रामाणिक ग्रन्थ पातञ्जल योगदर्शन में जिन चार प्रकार की सम्प्रज्ञात समाधियों का वर्णन है, उनमें से दो सवितर्क व सविचार समाधि की सिद्धि बिना अपरा विद्या अर्थात् पदार्थ विज्ञान के हो ही नहीं सकती। जब तक इन दो प्रकार की सम्प्रज्ञात समाधियों की सिद्धि नहीं होगी, तब तक अन्य दो सम्प्रज्ञात समाधि एवं सर्वोत्तम असम्प्रज्ञात समाधि की सिद्धि भी नहीं हो सकती। **इस प्रकार ब्रह्म वा आत्म साक्षात्कार के लिए पदार्थ विज्ञान का होना अनिवार्य है। यहाँ तक कि ईश्वर तत्व की अनुमान प्रमाण से सिद्धि भी बिना पदार्थ विज्ञान के नहीं हो सकती।** उधर यदि भौतिक उन्नति की बात करें तो कोई भी सामान्य बुद्धि वाला व्यक्ति भी इस बात को इंकार नहीं कर सकता कि बिना पदार्थ विज्ञान के न केवल भौतिक उन्नति का होना असम्भव है अपितु जीवन निर्वाह तक भी बिना पदार्थ विज्ञान के असम्भव है।

इससे सिद्ध हुआ कि लोक और परलोक दोनों की सिद्धि हेतु पदार्थ विज्ञान व अध्यात्म विज्ञान दोनों का ही होना अनिवार्य है। उधर महर्षि कणाद ने वैशेषिकदर्शन में धर्म को परिभाषित करते हुए लिखा है- **"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः" वै.द. १.१.२** अर्थात् जिससे लोक व परलोक अर्थात् भौतिक ऐश्वर्य एवं मोक्ष दोनों की सिद्धि हो, वही धर्म कहलाता है। तब निश्चित ही विद्या विज्ञान व धर्म दोनों समानार्थक शब्द हैं। **जड़ का धर्म जानना पदार्थ विज्ञान व चेतन का धर्म जानना आध्यात्मिक विज्ञान कहलाता है।**

इस कारण संसार में वेद ही ऐसे ग्रन्थ हैं जिनमें सम्पूर्ण धर्म का वर्णन है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने अपनी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं वेद भाष्य में दोनों ही विद्याओं की उन्नति की क्रान्तिकारी प्रेरणा भी की है और उनके अति सूक्ष्म संकेत भी दिये हैं।

मेरे वेद भक्तो! मैंने इसी प्रेरणा से प्रेरित होकर १० अक्टूबर २००४ से वेद विज्ञान अनुसंधान का कार्य विधिवत् प्रारम्भ किया था। उससे पूर्व एक पत्रवाचन 'वर्ल्ड कांग्रेस ऑन वैदिक सायंसेज' बंगलोर में अगस्त २००४ में अवश्य किया था, जो आर्य समाज भीनमाल में रहते हुए यों ही मनोरंजन हेतु लिखा था। यह पत्र मैंने मेरी स्मृति के आधार पर १७ जून २००४ को इस सेमीनार के आयोजक मण्डल को भेजा था, जिसके आधार पर मुझे आने का विधिवत् निमन्त्रण मिला। यह पत्रवाचन मैंने शायद ६ अगस्त २००४ को किया था। इस पत्र में मेरी प्रमुख स्थापनायें निम्नानुसार थीं-

१. **बिग बैंग थ्यौरी के सन्दर्भ में मैंने ऐसे किसी बिग बैंग से स्पष्ट नकारा था, जहाँ शून्य आयतन में अनन्त द्रव्यमान व अनन्त घनत्व की अवधारणा को स्वीकारा जाता है। एकमात्र मैंने इस अवधारणा का बड़े तार्किक व वैज्ञानिक ढंग से खण्डन किया था। आज तक मैं अपनी स्थापना पर दृढ़ हूँ। मेरा कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। भले ही संसार के वैज्ञानिक अपनी बात बदलते रहें।**

२. **वर्तमान बिग बैंग सिद्धान्त यदि शून्य आयतन की हठ को छोड़ भी दे, तब भी यह सृष्टि की सर्वप्रथम अवस्था है, इसका खण्डन मैंने तब भी किया था और आज भी करता हूँ। इस विषय में भी वैज्ञानिक अपना मत बदलते रहे हैं। अन्य भी मेरी कई आपत्तियां तब भी थीं और अब भी हैं।**

३. **सृष्टि अनादि व अनन्त है अर्थात् यह सदैव से है व सदैव रहेगी। इस सिद्धान्त का खण्डन मैंने तब भी किया और आज भी करता हूँ। मैंने सृष्टि के मूल कारण को अनादि व अनन्त तब भी माना था और आज भी मानता हूँ।**

४. **वर्तमान विज्ञान में जो कण मूल कण माने जाते हैं। जैसे- फोटोन, न्यूट्रिनो, इलेक्ट्रोन, क्वार्क आदि को तब भी मूल कण नहीं माना था और अब भी नहीं मानता हूँ।**

५. **मैंने बिग बैंग से विपरीत सृष्टि का प्रारम्भ अत्यन्त उच्च ताप व अनन्त घनत्व वाले पदार्थ के स्थान पर अनन्त शीतलता व शून्य घनत्व से माना था और अब भी वैसा ही मानता हूँ।**

इनमें से कुछ बिन्दुओं पर मैं कुछ प्रकाश डालना चाहूँगा- (१) **ब्रिटिश गणितज्ञ व खगोलशास्त्री स्टीफन हॉकिंग** ने अपनी पुस्तक Briefer history of times के पृष्ठ सं. ६८ पर लिखा है- 'The entire universe was squashed into single point with zero size like a sphere of radius zero' अर्थात् सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पहले शून्य आयतन में समाया हुआ था।

हमने अपने उपर्युक्त लेख **'सृष्टि का मूल उपादान कारण'** में इस धारणा को चुनौती दी थी। उस विज्ञान कांग्रेस में विश्व के सात देशों के वेदज्ञों व वैज्ञानिकों ने भाग लिया था। अकेले हमने ही इस धारणा को चुनौती दी थी। जिसका उत्तर वहाँ उपस्थित किसी भी विद्वान् वा वैज्ञानिक ने नहीं दिया था। उन्हीं दिनों ४ अगस्त २००४ को दैनिक भास्कर के मुख पत्र पर हमने **भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई के खगोलशास्त्री डॉ. आभासकुमार जी मित्रा** के उस लेख की चर्चा पढ़ी, जिसमें उन्होंने बिग बैंग का तो नहीं परन्तु ब्लैक होल को लेकर यह सिद्ध किया कि ब्लैक होल का आयतन शून्य होने पर उसका द्रव्यमान भी शून्य ही होगा। यह विचार हमारे विचार से मिलता था, जिसे हमने १७ जून २००४ में इसी लेख में लिखा था। १६.१२.२००६ में येरूशलम विश्वविद्यालय में स्टीफन हॉकिंग ने अपने व्याख्यान में बिग बैंग के समय आकार के बारे में कहा- 'A point as infinite density' यहाँ उस point के आयतन जिसे वे पहले शून्य मानते थे, पर मौन रहना उचित समझा। कदाचित् यह मित्रा साहब के लेख अथवा हमारी पुस्तक जिसकी चर्चा इस लेख में आगे की गयी है, का कुछ प्रभाव हो सकता है।

जुलाई २०१० में Discovery Channel पर इस Point का आकार स्टीफन हॉकिंग ने Atom के आकार के बराबर माना।

पाठक! **देखें, स्टीफन हॉकिंग के विचार इस विषय में बदले हैं। वैज्ञानिक को सत्य के हित में वैचारिक परिवर्तन करना भी चाहिए परन्तु हमारे विचार १७ जुलाई २००४ से अब तक स्थिर हैं। वैज्ञानिक हमारे विचारों के निकट ही आ रहे हैं।**

२५ अगस्त २००४ को अणुशक्तिनगर, मुम्बई के श्रीमान् विजयकुमार जी भल्ला, तत्कालीन एडिशनल चीफ इंजीनियर, N.P.C.I.L. मुम्बई के माध्यम से डॉ. आभासकुमार जी मित्रा से मेरी भेंट हुई। श्रीमान् भल्ला जी ने बंगलोर की कांग्रेस (सेमीनार) में हमारा लेख सुना था और उन्हें यह लेख ३२० वक्ताओं के लेखों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण व गम्भीर लगा, इस कारण उन्होंने ही मुझे मुम्बई आने का निमन्त्रण दिया। उसी समय मेरे लेख की महत्ता से अभिभूत होकर मुझे शायद श्रोता के रूप में आये दुबई के व्यापारी ने दुबई चलने का अत्यधिक आग्रह किया, जिसे मैंने विनम्रता से अस्वीकार कर दिया। अस्तु, मित्रा साहब से भेंट के समय उन्होंने मुझे अपना वह लेख जो ब्लैक होल पर लिखा था, मुझे दिया। इस लेख का शीर्षक था- A new proof for non – occurrence of trapped surfaces and information Para dox इसके साथ उन्होंने मुझे पोलैण्ड, आयरलैण्ड एवं ऑस्ट्रिया के वैज्ञानिकों का संयुक्त लेख 'The Jung equation, apparent horizons, and the Penrose inequality' भी दिया।

मैं इन लेखों का भाव ही समझ सका जो यह था कि ये शून्य आयतन में अनन्त द्रव्यमान का होना अस्वीकार कर रहे थे। इन विदेशी वैज्ञानिकों ने मित्रा साहब के लेख से प्रेरणा ली थी, यह भी स्पष्ट था परन्तु उन्होंने कहीं मित्रा साहब के नाम का संकेत भी नहीं किया था। **वैज्ञानिकों में यह व्यवहार मुझे विचित्र व दुःखद ही प्रतीत हुआ।**

(२) व (३) बिग बैंग के समर्थक बिग बैंग के चक्रों को मानकर सृष्टि को अनादि मानने लगे हैं। मैंने जिस समय उपर्युक्त लेख लिखा था, उस समय मैंने **भारतीय खगोलशास्त्री पद्‌म विभूषण डॉ. जयन्त विष्णुनार्लिकर** की अनादि ब्रह्माण्ड की धारणा पढ़ी, जो मूलतः **ब्रिटिश वैज्ञानिक फ्रेड हॉयल** आदि की थी। मैंने **तब भी उस पत्र में इस धारणा का खण्डन किया था।** उन्होंने इस धारणा के पीछे जो हेतु दिये थे, वे केवल बिग बैंग मॉडल के विरुद्ध व प्रतिक्रियावश दिये गये थे तथा वे वास्तव में वे उचित हेतु नहीं थे। **इस समय अनादि ब्रह्माण्ड का सिद्धान्त डॉ. मित्रा साहब का मेरी दृष्टि में है** जो ११ अक्टूबर २०१३ को मुझे भेजा गया था। यह लेख ठोस प्रतीत हुआ। इसमें कई तर्क अति सुदृढ़ है। कम से कम बिग बैंग मॉडल को ध्वस्त करने वाला तो यह लेख ही है। यह वह लेख है जिसे उन्होंने मॉस्को में शायद जून २००१३ में पढ़ा गया। इस लेख का शीर्षक है- 'Einsteinian Revolution's wrong turn; lumpy interacting cosmos assumed as smooth perfect fluid; no dark energy, eternal universe' मैं इस लेख के उस तर्कों से पूर्ण सहमत हूँ, जो बिग बैंग के विरुद्ध प्रस्तुत किये हैं परन्तु **वर्तमान ज्ञात सभी पदार्थ यहाँ तक कि मूल कण माने जाने वाले कण अनादि हैं, इससे मेरी सहमति पहले भी नहीं थी और अब भी नहीं है। मास्को में जब डॉ. मित्रा साहब ने यह लेख पढ़ा था, उस समय उन्होंने बिग बैंग के स्थान पर अनादि ब्रह्माण्ड तथा ब्लैक होल के स्थान पर ECO की नयी अवधारणा पर लेख पढ़े थे। उस समय वहाँ सम्पूर्ण विश्व के लगभग ७५ महान् वैज्ञानिक उपस्थित थे। उनमें से किसी ने भी मित्रा साहब के लेख का खण्डन नहीं किया तथा उनका लेख सबसे गम्भीर माना गया। पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि इन लेखों में मित्रा साहब ने जो प्रश्न प्रस्तुत किये थे, एक-दो तर्क वह भी थे, जो मैंने उनसे कुछ माह पूर्व कई वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत किये थे और स्वयं मित्रा साहब से अप्रैल २०१३ में मेरी उन पर मुम्बई में चर्चा हुई थी।**

पाठकगण! मित्रा साहब की सृष्टि में गैलेक्सियाँ, तारे आदि अनादि नहीं है। ये मूल तत्व से बनते व बिगड़ते रहते हैं। कहीं निर्माण तो कही विनाश चलता है, इलेक्ट्रॉन, क्वार्क, न्यूट्रिनो, फोटोन आदि कभी न बनते ओर नष्ट होते है। मेरे मतानुसार भी गैलेक्सियाँ अनादि नहीं हैं, ये मूल तत्व से एक साथ बनते व एक साथ मूल पदार्थ में लय हो जाते हैं। **मेरे मत में इलेक्ट्रॉन, क्वार्क, न्यूट्रिनो, फोटोन, आदि में कोई मूल कण नहीं हैं। इनका निर्माण भी मूल पदार्थ से समय चक्रानुसार होता रहता है और इसी पदार्थ में इन कणों का लय भी होता रहता है।** मूल पदार्थ अनादि व अनन्त है। मेरे मतानुसार इस निर्माण कार्य में **परमात्मा की अनिवार्य भूमिका रहती है। भौतिक के हर नियम में उसकी भूमिका स्पष्ट होती है।** हाँ, हो सब नियमनुसार ही हो रहा है।

हमारे व मित्रा साहब के सिद्धान्तों में यह भेद व समानता है। **वे अनादि ब्रह्माण्ड मानते हैं और मैं अनादि मूल पदार्थ मानता हूँ।** हमारे कुछ दार्शनिक कहाने वाले अथवा अति उत्साही झट कह देंगे कि इसमें क्या है? सत्व, रजस्, तमस्, अहंकार, इन्द्रियां, मन, सूक्ष्मभूत सब वर्तमान विज्ञान के मूल कणों से सूक्ष्म हैं। अब कोई वैज्ञानिक तो क्या विज्ञान का सामान्य छात्र भी यह पूछे कि प्रथम तो क्या आप मूल कणों की जानकारी रखते हैं एवं इन अपने पदार्थों के स्वरूप बताइये, जिससे इन पर वैज्ञानिक अनुसंधान कर सकें, तब ये दार्शनिक मौन धारण ही कर लेंगे। यही प्रश्न बंगलौर के **भारत विख्यात (जैसा मैंने सुना) हार्ट-सर्जन डॉ. सतीशचन्द जी शर्मा जो विचारधारा से आर्य समाजी तथा वैदिक यज्ञ विज्ञान पर अनुसंधान भी करते हैं, ने**

फोन पर मुझे पूछा था। जब मैंने कहा कि मैं इन सब के स्वरूप, गुणधर्म उस भाषा में बताऊंगा, जिस पर वर्तमान विज्ञान गम्भीर शोध कर सके, तब उन्होंने कहा कि आप ऐसे प्रथम व्यक्ति हैं, जो इस पर कार्य कर रहे हैं।

पाठकगण! निम्न बिन्दुओं पर यदि मेरे वर्तमान विचार जानना चाहते हैं तो २००/- धनादेश भेजकर ईश्वर तत्व विज्ञान शिविर के ईश्वर विषय पर व्याख्यानों की डी. वी. डी. मंगाकर जान सकते हैं। इनमें दिये विचार निम्नानुसार है।

(१) बिग बैंग की व्यापक समालोचना वैज्ञानिक तर्कों के साथ।
(२) बिग बैग चक्र की समालोचना।
(३) अनादि ब्रह्माण्ड की समीक्षा की वैज्ञानिक तर्कों के साथ।
(४) वर्तमान मूल कण क्यों मूल कण नहीं तथा क्यों वे अनादि नहीं?
(५) सृष्टि अत्पत्ति में ईश्वर तत्व की अनिवार्य भूमिका विशुद्ध भौतिक विज्ञान के तर्कों व तथ्यों पर आधारित।
(६) ईश्वर के स्वरूप की वैज्ञानिकता।

जिनकी वर्तमान भौतिक विज्ञान में गहरी रुचि व गति हो, वे ही इन डी. वी. डी. में दिये मेरे व्याख्यानों को समझ सकेंगे। सामान्य आर्यजन व केवल संस्कृत के विद्वान् बिल्कुल भी नहीं समझ पायेगें। यह बात पूर्व से ही सूचित करना उचित समझ रहा हूँ।

पाठकगण! हमने अपने प्रथम लेख की व्याख्या में भाभा परमाणु अनुसंधन केन्द्र के कुछ वैज्ञानिकों एवं श्री भल्ला साहब के आग्रह तथा मान्य डॉ. मित्रा साहब के प्रोत्साहन पर एक पुस्तक अप्रैल २००५ में प्रकाशित की। इस अन्तिम रूप देने से पूर्व २६ जनवरी २००५ में डॉ. मित्रा साहब से मिला तथा भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के एक अन्य वैज्ञानिक डॉ. जे. सी. व्यास जी से व्यापक चर्चा हुई थी। मित्रा साहब ने मेरी वर्तमान विज्ञान संम्बधी कुछ भूलों को सुधरवाया भी था।

उस पुस्तक में हमने उस समय ब्लैक होल पर टिप्पणी करते हुऐ लिखा था **''जब तक शून्य आयतन में असीम घनत्व वाले ब्लैक होल सिद्धान्त में दम रहेगा, तब तक बिग बैंग के विचार को बेदम नहीं किया जा सकता।''**

यहाँ कोई पाठक यह विचार कर सकता है कि हमने मित्रा साहब के लेख के बाद ही ऐसा लिखा, उसे हमारे १७ जून २००४ को लिखे लेख को ध्यान रखना चाहियें। इस लेख के आधार पर ही मित्रा साहब व हमारे विचारों के समानता सिद्ध हुई। उनके साथ उसी समय से हमारा संवाद सतत चलता रहा है। मैं मित्रा साहब की कुछ बातों को तब भी स्वीकार नहीं किया था, जिसका संकेत उस पुस्तक की भूमिका में भी किया है। इस पुस्तक की प्रस्तावना भी उन्होंने ही लिखी है। इस पुस्तक में वे पांचों बिन्दु उठाये हैं जो उस लेख में थे।

हमने इस पुस्तक अंग्रेजी अनुवाद भी कराया जिसका नाम था, "Basic material cause of the creation" इस पुस्तक को हमने अपने पत्रांक ७६६/१६.०४.२००६ के माध्यम से **अमरीकी राष्ट्रपति को** पत्रांक ७६८/१६.०४.०६ के माध्यम से **ब्रिटिश खगोलशास्त्री स्टीफन हॉकिंग** को पत्रांक ७६६/१६.०४.०६ के माध्यम से **कैलीफोर्निया (U.S.A.) विश्वविद्यालय के Frederick w. Gluck chair in theoritical physics के director आदि को भेजा था।** हमने इस पुस्तक में अत्यन्त शीतलता से सृष्टि की उत्पत्ति का प्रारम्भ माना तथा बिग बैंग का प्रबल खण्डन किया था। इसके पश्चात् मैंने राजस्थान पत्रिका दैनिक में १८.१०.२००८ के संस्करण में **कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के भौतिक वैज्ञानिकों के एक अनुसंधान के बारे में पढ़ा जिससे संकेत मिल रहा था कि वे अति शीतलता से सृष्टि का प्रारम्भ मानने लगे हैं।** वह सूचनात्मक लेख मेरे पास था पर इस समय कहीं गुम हो गया प्रतीत होता है। मैं यह दावा नहीं कर

रहा कि मेरी पुस्तक भेजने के ढाई वर्ष उस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को मेरी पुस्तक से ही प्रेरणा मिली होगी परन्तु मेरा यह दावा तो है कि **उस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व उस देश के राष्ट्रपति को पुस्तक भेज कर यह निवेदन अवश्य किया था कि वर्तमान सृष्टि विज्ञान, नाभिकीय भौतिक व कण भौतिकी पर मेरे गम्भीर प्रश्न हैं जिन पर आप अवश्य विचार करने का कष्ट करें।**

अभी हाल में पलवल के हमारे एक हितचिन्तक जागरुक आर्य श्री श्यामसिंह आर्य 'वेद निपुण' ने दैनिक जागरण २७.०१.२०१४ में छपी एक सूचना की छायाप्रति भेजी। **इसमें स्टीफन हॉकिंग के द्वारा अपनी ब्लैक थ्यौरी को नकारने की सूचना छपी है। हमने इन्टरनेट से स्टीफन हॉकिंग का वह लेख जो ब्रिटिश विज्ञान पत्रिका नेचर में छपा है, भी देख लिया है।** हमने स्टीफन हॉकिंग के ब्लैक होल सिद्धान्त पर अपनी पुस्तक में भी प्रश्न खड़े किये थे, जिसकी चर्चा में ऊपर कर चुका हूँ। **हमने पुनः २६.०८.२०१३ को विश्व के अनेक वैज्ञानिकों व वैज्ञानिक संस्थानों को आधुनिक भौतिक विज्ञान पर १२ गम्भीर प्रश्न खड़े किये थे। इन संस्थानों के अमरीकी अंतरिक्ष एर्जेसी NASA, विश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला CERN, के अतिरिक्त कई अमरीकी, ब्रिटिश, जापानी, कोरियाई, स्पेनिश, स्विस, फ्रांसीसी एवं डच वैज्ञानिकों के अतिरिक्त भारत की राष्ट्रिय भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला, भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन एवं कुछ काल पश्चात् डॉ. कलाम व प्रो. यशपाल आदि को भी ये प्रश्न भेजे थे।** स्टीफन हॉकिंग के टैक्नीकल असिस्टेंट के अतिरिक्त अन्य कहीं से किसी का उत्तर नहीं मिला। **इन प्रश्नों पर भारतीय प्रख्यात खगोल वैज्ञानिक डॉ. मित्रा साहब से व्यापक चर्चा की।**

अभी मैंने स्टीफन हॉकिंग को उनके विचार परिवर्तन पर एक महत्वपूर्ण पत्र अंग्रेजी अनुवाद करवा कर भेजा था। जो हिन्दी भाषा में निम्नानुसार है-

आदरणीय श्रीमान् स्टीफन हॉकिंग
डीएएमटीपी
सेन्टर फॉर मैथमेटिकल सायंस
विलबेरफोर्स रोड
कैम्ब्रीज सीबीएस ओडब्ल्यूए
(यू.के.)
विषय- ब्लैक हॉल पर आपके परिवर्तित विचार।
महोदय!

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि विभिन्न माध्यमों से आपके ब्लैक होल विषय में परिवर्तित विचार जाने। नेचर न्यूज **24 जनवरी 2014 'स्टीफन हॉकिंग : देयर आर नो ब्लैक होल्स'** लेख पढ़ा। सर्वप्रथम सत्य को स्वीकार करने पर आपको हार्दिक बधाई। क्या आपको स्मरण है कि मैंने 29-8-2013 को एक ई-मेल करके ब्लैक होल तथा बिग बैंग मॉडल पर आपसे एवं संसार के अन्य वैज्ञानिकों से 12 प्रश्न पूछे थे। ब्लैक होल तथा इवेन्ट होराइजन विषयक मेरा प्रश्न इस प्रकार था- **''यह माना जाता है कि ब्लैक होल के निकट टाइम रुक जाता है। इस कारण यह मानना होगा कि ब्लैक होल के बाहरी भाग और उसके अन्दर कोई क्रिया नहीं होगी, क्योंकि बिना समय के कोई क्रिया वा हलचल नहीं हो सकती, परन्तु यह माना जाता है कि ब्लैक होल में गुरुत्वाकर्षण बल अत्यधिक होता है, इससे गुरुत्वीय तरंगें तो उत्पन्न होंगी ही। तब ब्लैक होल पर क्रिया व हलचल सिद्ध हो ही गयी। ब्लैक होल पर रेडियेशन विद्यमान होते ही हैं, भले ही वे बाहर उत्सर्जित नहीं हो सकें। स्टीफन हॉकिंग स्वयं रेडियेशन का उत्सर्जन मानते हैं, जिन्हें हॉकिंग रेडियेशन नाम दिया जाता**

है। तब क्रिया व गति स्वयं ही सिद्ध हो जाती है। तब, कैसे कहा जाता है कि ब्लैक होल पर समय और गति रुक जाती है।''

महोदय! मैं जानना चाहता हूँ कि **क्या आपने अपना विचार परिवर्तित करते समय इस पत्र पर भी ध्यान दिया था, उसी दिन 29-8-2013 को आपके टेक्निकल असिस्टेंट मि. जोनाथन वर्ड ने मुझे पत्र लिखा था, जिसमें मेरे पत्र का उत्तर देने में आपकी असमर्थता दर्शायी थी।** आपने नवीनतम लेख में ब्लैक होल के स्थान पर जिस फायर वाल की चर्चा की है तथा इवेन्ट होराजन के स्थान पर एपरन्ट होराइजन की चर्चा की है, **वह वस्तुतः भारतीय खगोलशास्त्री प्रो. ए.के. मित्रा (बी.ए.आर.सी.) के विचार हैं। उन्होंने ये विचार आपसे पूर्व अनेक प्रकाशित पत्रों में विस्तार से व्यक्त किये हैं तथा उनके लेख आपकी अपेक्षा काफी विस्तृत एवं स्पष्ट हैं परन्तु आपके विचार अति संक्षिप्त व अस्पष्ट हैं।** उनके ब्लैक होल पर कई लेख मेरे पास हैं। **अतः आपके नवीनतम विचारों पर उनका दावा उचित है।** आश्चर्य है कि आपने अपने लेख में उनके नाम का उल्लेख तक नहीं किया। **मैंने तो ब्लैक होल तथा इवेन्ट होराजन पर गम्भीर प्रश्न ही खड़े किये थे,** तब मेरी चर्चा करना तो आवश्यक नहीं था परन्तु डॉ. मित्रा ने तो ब्लैक होल के विकल्प के रूप में विस्तृत थ्यौरी प्रस्तुत की है, **तब उनके नाम का उल्लेख होना चाहिए था। आपने अपने पूर्व मत को क्यों परिवर्तित किया, इसके लिए आपके लेख में कोई तर्क नहीं है तथा फायर वाल वाला सिद्धान्त की सिद्धि भी आपने नहीं की है,** केवल मान लिया है। **इस कारण आपका लेख वैज्ञानिक दृष्टि से विशेष उपयोगी प्रतीत नहीं होता।** आपकी पुस्तक **'ग्राण्ड डिजायन'** की भी यही स्थिति है। कृपया इस कथन के लिए क्षमा करें। अस्तु।

महोदय! मैंने 19-4-2006 को अपने पत्रांक 798 के द्वारा आपको अपनी पुस्तक **'बेसिक मैटेरियल कोज ऑफ दी क्रियेशन'** जिसकी **फॉरवर्ड डॉ. ए.के. मित्रा** ने ही लिखी थी, आपको भेजी थी। इस पुस्तक में ब्लैक होल एण्ड बिग बैंग मॉडल के शून्य आयतन में अनन्त द्रव्यमान एवं अनन्त ऊर्जा के होने का विस्तार से खण्डन किया था। इससे पूर्व अगस्त 2004 में डॉ. मित्रा ने अपने ब्लैक होल विषयक लेख में भी इसी प्रकार का विचार व्यक्त किया था। उस समय आपने अपनी पुस्तक ब्रिफर हिस्ट्री ऑफ टाइम्स में बिग बैंग की चर्चा में शून्य आयतन में अनन्त द्रव्यमान की बात कही है। 16-12-2004 में येरूशलम विश्वविद्यालय में आपके व्याख्यान में बिग बैंग के समय आयतन शून्य नहीं माना है बल्कि एक पॉइन्ट लिखा है। उस पॉइन्ट के आयतन की बात नहीं की है। जुलाई 2010 में डिस्कवरी टी.वी. चैनल पर इस पॉइन्ट का आयतन एटम के बराबर माना है।

महोदय! **मैं जानना चाहता हूँ कि आपके इन विचारों में परिवर्तन के पीछे डॉ. मित्रा के लेख अथवा मेरी पुस्तक का कुछ योगदान है वा नहीं?**

महोदय! आपने अपनी पुस्तक 'ग्राण्ड डिजायन' में ईश्वर अस्तित्व का खण्डन करके भौतिकी के नियमों से सृष्टि उत्पत्ति की बात की है। इसका खण्डन हमारी वेब साइट www.vaidicscience.com पर उपलब्ध है परन्तु यह वीडियो अभी हिन्दी भाषा में उपलब्ध है। महोदय! **ईश्वर के नियम ही भौतिकी के नियम हैं जैसा कि रिचर्ड पी. फाइनमैन ने स्वीकार किया है। ईश्वर की सत्ता वर्तमान भौतिकी के नियमों से ही सिद्ध हो जाती है।** ईश्वर बिना नियम सृष्टि की उत्पत्ति व संचालन नहीं कर सकता।

मेरा निवेदन है कि आप अपनी बिग बैंग थ्यौरी पर भी पुनर्विचार करें। आशा है आप कभी न कभी इसकी असत्यता को भी स्वीकार करेंगे। जिस ईश्वर को आप नकारते हैं, वही ईश्वर आपको दीर्घायु प्रदान करे, जिससे आप अपने बिग बैंग मॉडल की भूलों को भी स्वीकार कर मेरे शोध कार्य के पूर्ण होने पर उस पर भी विचार कर सकें। मुझे इस समय विश्वास है कि मैं निम्न विषयों पर संसार के विज्ञान को कुछ विशेष दिशा दे सकूंगा-

१. बल की अवधारणा जो आज अत्यन्त अस्पष्ट व अपूर्ण है। जिस पर प्रख्यात अमरीकी वैज्ञानिक रिचर्ड पी. फाइनमैन के डायग्राम्स को विश्वभर में अत्यन्त प्रामाणिक माना जाता है। मैं इस विषय पर फाइनमैन से बहुत आगे जाकर लेख लिख सकूंगा।
२. जिन्हें संसार आज मूल कण मानता है, उनके मूल कण न होने तथा इनके निर्माण की पूर्ण प्रक्रिया को बहुत विस्तार से स्पष्ट कर सकूंगा। वर्तमान विज्ञान इस विषय में विचार भी नहीं कर पा रहा है अथवा कर रहा है।
३. ब्लैक होल के स्थान पर डॉ. मित्रा साहब के इ.सी.ओ. मॉडल से मेरा ऐतरेय विज्ञान भी सहमत है। मैं इस विषय में विचार लिख सकूंगा।
४. सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया को वर्तमान किसी भी सिद्धान्त से आगे ले जाकर विस्तार से अनादि मूल पदार्थ से लेकर तारों के निर्माण तक के विषय में भी विस्तार से लिख सकूंगा।
५. डार्क इनर्जी जिसे बिग बैंग के लिए उत्तरदायी माना जाता है, के दूसरे स्वरूप जिसमें बिग बैंग नहीं बल्कि अनेक विस्फोट सदैव होते रहते हैं, सृष्टि की हर क्रिया में उसकी भूमिका को दर्शा सकूंगा। मेरी डार्क इनर्जी वर्तमान विज्ञान द्वारा कल्पित डार्क इनर्जी से भिन्न होगी।
६. वर्तमान विज्ञान में कल्पित वैक्यूम इनर्जी के रूप में एक अन्य लगभग सर्वव्यापक ऊर्जा के स्वरूप को बतला सकूंगा।
७. सृष्टि विज्ञान, खगोल विज्ञान एवं कण भौतिकी के अनेक रहस्यमय बिन्दुओं पर प्रकाश डाल सकूंगा।
८. इन सब कार्यों के लिए ईश्वर नामक चेतन सर्वव्यापक व सर्वज्ञ, निराकार व सर्वशक्तिमती सत्ता को भी सिद्ध कर सकूंगा।
९. वेद मंत्र इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त विशेष प्रकार की तरंगों के रूप में ईश्वरीय रचना है, ये मंत्र कुरान, बाइबिल आदि किसी भी अन्य ग्रन्थ के समान नहीं है। इसे भी सिद्ध कर सकूंगा।

आशा है आप व संसार के वैज्ञानिक इन बिन्दुओं पर भी अभी से विचार करना प्रारम्भ करेंगे। इसी आशा के साथ

दिनांक- ७.०२.२०१४

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
अध्यक्ष, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
आचार्य, वेद विज्ञान मन्दिर
(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)
भागलभीम, भीनमाल, जिला-जालोर
(राजस्थान) भारत पिन- ३४३०२९
दूरभाष- 02969 292103, 09414182173
Website: www.vaidicscience.com
E-mail: swamiagnivrat@gmail.com

आश्चर्य कि इस अति महत्वपूर्ण और सारगर्भित लेख का स्टीफन हॉकिंग के टैक्नीकल असिस्टेंट ने नितान्त व्यर्थ जवाब दिया। जो इस प्रकार है-

S.W.Hawking@damtp.cam.ac.uk Feb. 10.2014

Thank you for your email to Professor Hawking.

As you can imagine, Prof. Hawking receives many such every day. He

very much regrets that due to the severe limitations he works under, and the enormous number of requests he receives, he is unable to compose a reply to every message, and we do not have the resources to deal with many of the specific scientific enquiries and theories we receive.

Please see the website http://www.hawking.org.uk for more information about Professor Hawking, his life and his work.

Yours faithfully
Jonathan Wood
Technical Assistant to
Professor S W Hawking CH CBE FRS
http://www.hawking.org.uk

इसका भाव है- ''स्टीफन हॉकिंग के पास प्रतिदिन अनेकों प्रश्न आते हैं। वे अत्यन्त खेद व्यक्त करते हुए उत्तर नहीं दे पा रहे हैं। उनकी कुछ गम्भीर समस्याएं, सीमाएं हैं। उनके पास विभिन्न वैज्ञानिक प्रश्नों तथा सिद्धान्तों के उत्तर देने हेतु वांछित साधन भी नहीं है।'' देखें, पाठक! कैसा बहाना बनाया है।

मेरे वेदभक्तो! **मैं दृढ़ता से अब तक स्थिर सिद्धान्त लेकर चल रहा हूँ, मैं आधुनिक विज्ञान के पीछे चल रहा हूँ अथवा वेद के पीछे विज्ञान को चलाने का प्रयास कर रहा हूँ और कहाँ तक उसमें अब तक सफल हुआ हूँ, यह इस लेख से ही विदित हो जायेगा। हां, अभी तक मैंने वर्तमान विज्ञान पर गम्भीर प्रश्न खड़े करके उन्हें मत परिवर्तन करने को विवश ही किया व कर रहा हूँ परन्तु अभी तक मैंने अपना कोई वैदिक मत स्पष्ट नहीं किया है सिवा उपरिवर्णित पुस्तक के। अभी मेरा ऐतरेय ब्राह्मण भाष्य चल रहा है। अनुमान है यह लगभग ढाई हजार पृष्ठ का होगा।** ईश्वर कृपा से और आप सबके सहयोग से सम्भवतः तीन वर्ष में लेखन कार्य पूर्ण हो जाये। उसके पश्चात् टाइप होना प्रूफ रीडिंग का काम चलता रहेगा।

उसी समय मैं कुछ विषयों पर अपने ऐतरेय वैदिक विज्ञान के आधार पर कुछ लेख लिखने का प्रयास करूंगा। **मैं किस क्षेत्र में विशेष अनुसंधान करने की आशा करता हूँ इसका ज्ञान मेरे स्टीफन हॉकिंग साहब को लिखे उपर्युक्त पत्र द्वारा आपको हो गया होगा।** अभी धैर्य व मौन का ही आश्रय है। **मैंने वेद विज्ञान शोध व वेद मंत्रों को समझने की एक नवीन परन्तु लुप्त सनातन पद्धति को ईश्वर कृपा व महर्षि दयानन्द जी तथा पं. भगवद्Ùा जी रिसर्च स्कॉलर के सूक्ष्म संकेतों से खोजा है। मेरे वैदिक छन्द विज्ञान की ओर वैदिक विद्वान् सोचें वा नहीं परन्तु वर्तमान विज्ञान अवश्य इसकी ओर आयेगा।** राष्ट्रदूत दैनिक १०.१२.२०१२ के अनुसार **भारतीय प्रधान मंत्री के पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार एवं इसरो के वर्तमान अनुसंधान निदेशक डॉ. ओ.पी. पाण्डेय के अनुसार 'ओम्' ध्वनि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में गूंज रही है। संस्कृत ब्रह्माण्डीय भाषा है।** अभी शायद ६.०२.१४ को **इण्डिया न्यूज चैनल के समाचार के अनुसार अमरीकी अंतरिक्ष ऐजेंसी नासा के वैज्ञानिकों को ब्रह्माण्ड में 'ओम्' से मिलती-जुलती ध्वनि मिली है। अभी देखें क्या-२ खोज होती है?** मेरा ऐतरेय स्पष्ट बतायेगा कि कहाँ-२ किस छन्द की ध्वनियां किस रूप में विद्यमान हो सकती हैं? **सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में न केवल 'ओम्' अपितु सभी वेद की ऋचायें गूंज रही हैं। इन वैज्ञानिकों को 'ओम्' की ध्वनि अति संवेदी यंत्रों से सुनाई भर दी है, मैं इससें आगे यह भी बताऊंगा कि न केवल ओम् परमात्मा अपितु उसके वाचक 'ओम्' इस ध्वनि की इस ब्रह्माण्ड के निर्माण व संचालन में क्या भूमिका है? हम जिन वेद मंत्रों को बोलते हैं, उनकी ध्वनियां इस**

ब्रह्माण्ड में कहाँ-२ और किस-२ प्रकार की भूमिका निभा रही हैं। छन्दों का यह महाविज्ञान एक दिन इस भूतल पर वर्तमान विकसित विज्ञान को अवश्य चमत्कृत करेगा और इससे वेद व ऋषियों की सम्पूर्ण विजय होगी। इसका श्रेय अन्तिम ऋषि स्वामी दयानन्द जी महाराज एवं उनके आर्य समाज को ही मिलेगा। मैं तो निमिÙमात्र हूँ। इस विषय में मेरा कोई सहायक व प्रेरक नहीं है, सिवा परमात्मा व आर्षग्रन्थों के। **वर्तमान विज्ञान पर तो अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर प्रख्यात वैज्ञानिकों जिनमें सर्व श्री डॉ. आभास जी मित्रा, प्रो. ए.आर. राव साहब, प्रो. नरेन्द्र जी भण्डारी, प्रो. एन. के. मण्डल साहब आदि प्रमुख हैं,** से संवाद भी कर लेता हूँ उनसे प्रेरणा व प्रोत्साहन भी मिलता रहता है। मित्रा साहब से तो पिछले ६-१० वर्ष में बहुत कुछ सीखा भी है। इनके अतिरिक्त अन्य भी कई भौतिकविद् मेरे मित्र हैं। भूमण्डल में शाकाहार के वैज्ञानिक प्रणेता जो अमरीका, जापान, यूरोप, एशिया आदि अनेक देशों के भौतिक वैज्ञानिक संगठनों के सदस्य हैं, ऐसे **भौतिक विज्ञानी प्रोफेसर एम.एम. बजाज मेरे ऐतरेय व्याख्यान से अति उत्साहित व प्रभावित हैं।** परन्तु वेद विज्ञान विषय में आर्य समाज अथवा वैदिक जगत् में लगभग उदासीनता पाता हूँ। कुछ विद्वान् लेख लिखते रहते हैं परन्तु वे भी वर्तमान विज्ञान की आधी अधूरी जानकारी करके उसको ही वेद में खोजते देखे जाते हैं। इस कारण मेरा कोई संवादी भी नहीं है। पुनरपि में अकेला ही सन्तुष्ट हूँ।

मेरे वेदभक्त व देशभक्त पाठकगण! आपसे भी धैर्य रखने का आग्रह करता हूँ। निश्चित अवधि में ही मेरा संकल्प अवश्य पूर्ण होगा ऐसा विश्वास है। **वेद व ऋषियों के महान् विज्ञान और महर्षि दयानन्द जी के योगदान को संसार अवश्य कभी न कभी स्वीकार करेगा, यह मेरा विश्वास है।** किमधिकम्। फिर ईश्वर जाने। **मैं तो कर्म करने का ही अधिकारी हूँ फल तो मेरे हाथ में नहीं है। इस तथ्य को भी आपको स्मरण रखना चाहिए।**

हाँ, इतना अवश्य है कि **वर्तमान वैज्ञानिकों में भी बहुत पक्षपात व अनैतिकता का वातावरण है। जब मित्रा साहब का वर्षों से सिद्ध सिद्धान्त स्टीफन हॉकिंग जैसा प्रसिद्ध वैज्ञानिक बिना नाम लिए अपना बना लेता है, तब इसे कैसे नैतिकता व ईमानदारी का परिचायक माना जा सकता है? तब मुझ वैदिक विचार वाले के स्थापित सिद्धान्त को वे कैसे नाम सहित स्वीकार करेगें, यह गम्भीर चिन्ता की बात है।** इस चिन्ता को दूर करने का मेरे पास कोई उपाय भी नहीं हैं पुनरपि में तो निष्काम भाव से अपना पुरुषार्थ करता रहूँगा। जब समय आयेगा, तब देखा जायेगा। हाँ, इतना अवश्य है कि स्टीफन हॉकिंग के इस व्यवहार ने मुझे सचेत अवश्य कर दिया है कि मैं किसी भी मंच पर व्याख्यान अथवा लेख में अपने ऐतरेय विज्ञान पर कुछ भी स्पष्ट न कहूँ। कार्य पूर्ण होने और पुस्तक प्रकाशित होने पर विचार किया जाये कि अब क्या और कैसे करना है?

मेरे गम्भीर पत्र का उत्तर स्टीफन हॉकिंग नहीं दे पाये हैं। **उनका लेख कैसे बड़ी अन्तर्राष्ट्रिय समाचार बन गया, जबकि वह कोई शोध लेख ही नहीं है, मात्र एक वक्तव्य है, वह भी मित्रा साहब की नकल है। मेरे आक्षेप पर मौन साध जाना हॉकिंग साहब की सरासर अनैतिकता है। भारतीय मीडिया व भारतीय जनमानस की भी मानसिक दासता दयनीय स्तर की है कि स्टीफन हॉकिंग अथवा किसी विदेशी वैज्ञानिक का नाम सुनते ही रोमांचित हो उठती है, जबकि १० वर्ष से मित्रा साहब के ब्लैक होल के खण्डन पर जो पेपर विभिन्न अन्तर्राष्ट्रिय विज्ञान पत्रिकाओं में छपे और संसार का कोई वैज्ञानिक आज तक खण्डन नहीं कर सका, फिर भी उनका विशेष महत्व इस अभागे अपने भारत में नहीं है।** राजनैतिक परिदृश्य में सभी दासमनोवृत्ति के व्यक्ति दिखायी देते हैं। मैं इस चिन्ता में हूँ कि मेरे मित्र मित्रा साहब तो केवल वैज्ञानिकों के पक्षपात व ईर्ष्या के शिकार हैं परन्तु मैं तो वैदिक विचारधारा वाला होने से सम्पूर्ण वेद विरोधी समाज, राष्ट्र व विश्व में कैसे स्वीकार हो पाऊंगा? कोई मेरी स्थापित थ्यौरी को अपना बनाकर स्वार्थ सिद्ध करेगा और न मेरा नाम लेगा और न ही ऋषियों व वेदों का। हाँ, मैं राजनैतिक परिदृश्य के बदलने पर ही कुछ आशा कर रहा हूँ। मेरे पाठकगण! **मेरे साथ तो भारत का कथित वेदभक्त कहाने वाला हिन्दू समाज भी नहीं है, तब वेद विरोधी**

पत्रिकाओं का क्या विश्वास। मैं तो पूर्ण रूपेण चक्रव्यूह में फंसा हूँ। अब देखना यह है कि चतुर्दिक् आक्रामक कौरव दल से मैं कैसे अपने को बचा सकूंगा? मैं ईश्वर पर ही पूर्णतः आश्रित हूँ एवं कुछेक आर्य कार्यकर्ताओं पर। मैं अपना धैर्य, विश्वास सतत बनाये रखूंगा। एक बात और सभी आर्यों एवं अन्य वेदभक्तों को कहनी है कि कुछ नासमझ महानुभाव मुझसे किसी यन्त्र बनाने की अपेक्षा करते हैं तो कोई हवाई जहाज बनाने के अतिरिक्त किसी भी अनुसंधान को अनुसंधान मानते ही नहीं, वे वास्तव में बहुत नादान हैं। मेरे पास दो-चार बार इस आशय के फोन आये थे। मैं उन भाइयों को निवेदन करना चाहूंगा कि उन्हें विज्ञान की पद्धति का जरा भी ज्ञान नहीं हैं। मैं उन्हें केवल इतना ही निवेदन करूंगा कि वे अपने निकटस्थ विज्ञान के किसी सामान्य शिक्षक से ही विज्ञान की पद्धति का साधारण ज्ञान कर लें फिर मेरे कार्य पर टिप्पणी करें।

आर्यों! विज्ञान के तीन चरण होते हैं- ***(१)* भौतिकी के मूलभूत सिद्धान्तों की खोज *(२)* उनके आधार पर प्रयोग करने का सम्भव प्रयास *(३)* उन प्रयोगों के आधार पर तकनीकी विकास। इन तीनों में प्रथम कार्य सबसे कठिन व आधार के समान महत्वपूर्ण है। संसार में अधिकांश नोबल पुरस्कार आदि विजेता इसी क्षेत्र में कार्यरत होते हैं। बिना मूल सिद्धान्तों को जाने कभी कोई तकनीक नहीं बन सकती। न्यूटन, आइंस्टीन, मैक्स, प्लैंक, फाइनमैन, सी.वी. रमन, सी. सुब्रह्मण्यम्** आदि सभी ने कोई यन्त्र नहीं बनाया परन्तु संसार इनके खोजे सिद्धान्तों से ही तकनीकी विकास कर सका है। वर्तमान में **स्टीफन हॉकिंग, पीटर हिग्स, नार्लीकर, आभास मित्रा आदि भी कोई यन्त्र नहीं बना रहे पुनरपि ये संसार के प्रसिद्ध व्यक्ति हैं।** इस कारण समझ लें कि **मैं एक सुई भी नहीं बनाऊंगा परन्तु में संसार को भौतिकी के वे मूलभूत सिद्धान्त देने का प्रयास करूंगा, जो अब तक वेदादि शास्त्रों में ही गुप्त रूप से छुपे रहे हैं। ये मूलभूत सिद्धान्त ही परमात्मा के नियम होते हैं और इन्हें जानकर ही परमात्मा की सृष्टि, परमात्मा एवं उसके ज्ञान वेद को समझा जा सकता है। हवाई जहाज बनाने से न सृष्टि विद्या आती है और न सृष्टि विद्या के प्रदाता परमात्मा की सिद्धि व उपासना होती है और न उससे वेद ईश्वरीय सिद्ध होता है, जबकि मेरा लक्ष्य इनकी ही सिद्धि है।** इस तथ्य को आप भली भाँति समझ लें। **मुझसे वही आशा करें, जो मैं अपने संकल्प में व्यक्त कर चुका हूँ। यही संसार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण व कठिन कार्य है,** जिसकी शाखायें अन्य सभी महत्वपूर्ण व परोपकार के कार्य हैं।

ऐतरेय ब्राह्मण के विषय में आर्य समाज के वयोवृद्ध विद्वान् मान्य डॉ. जयदत्त जी उप्रैती का कहना है- ''इस ग्रन्थ की भाषा सबसे कठिन है। आपने बहुत बड़ा भार अपने कन्धों पर उठाया है। आपका कार्य जबरदस्त है।'' पू. स्वामी वेदानन्द जी (उत्तरकाशी) कहते हैं- ''आप एक ऋषि का कार्य कर रहे हैं। बहुत महत्वपूर्ण कार्य है, यह।''

मैं तो इतना ही निवेदन करता हूँ कि **परमात्मा की कृपा से मैं महर्षि ऐतरेय महीदास को मानो अपनी बुद्धि के नेत्रों से साक्षात् देखता हूँ, जिसके आधार पर मुझे वेद की ऋचायें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त दिखाई देती हैं। मैं केवल ऋषि दयानन्द का नहीं अपितु वेद तथा समस्त आर्ष परम्परा का कार्य कर रहा हूँ। मेरा अपना कुछ नहीं है, सब उन्हीं का है और कुछ आर्यों के सहयोग का फल है और अन्त में उन्हें सोंपने की ही इच्छा रखता हूँ। मैं कुछ भी फल अपने लिए नहीं चाहता हूँ। जब यश, कीर्ति के फल भोगने का समय आयेगा, तब तक कदाचित् मैं समाज से दूर हो जाऊंगा और एकाकी रहकर केवल योग साधना के फल का आनन्द लूंगा।** दुर्भाग्य से वेद का नाम लेने वाला पौराणिक जगत् तो इस दिशा में मानो गहरी नींद में सोया हुआ है। हाँ, **आप सब को यह भी स्मरण रखना चाहिये कि इस महान् यज्ञ में आपकी क्या भूमिका रही है, है वा रहेगी? मेरी भूमिका मैं निभा रहा हूँ, सतत कठोर तप अविराम कर रहा हूँ। आपको अपनी भूमिका स्वयं निश्चित करनी है।** आप में से कुछ बड़े-२ परोपकार का काम कर रहे हो सकते हैं, कोई मनोहारी कथायें करते हैं, प्रवचन करते हैं, विदेशों की यात्राएं करते हैं। आप यह सब अवश्य करते रहें परन्तु इस बात पर भी विचार करें कि वेद सब सत्य विद्याओं का मूल होने से इसके यथार्थ विज्ञान को जाने बिना कोई भी

परोपकार के कार्य सार्थक सिद्ध नहीं होंगे। इस देश व संसार में अनेक समाज सुधारक आये, उन्होंने अनेक परोपकार के कार्य भी किये परन्तु वेद विद्या के अभाव में उनके सभी सामाजिक व आध्यात्मिक कार्य विभिन्न सम्प्रदायों के जन्मदाता बन गये। इस कारण संसार में मानव जाति की अत्यधिक हानि हुई। केवल महर्षि दयानन्द जी ने ही इस रोग को पहिचाना और इस रोग की चिकित्सा में वेद विद्या की भूमिका को स्वीकार करके उसी हेतु अपना सर्वस्व सौंप दिया। **कहीं भी कभी भी उन्होंने अपने धन, यश व संख्या बल बढ़ाने हेतु संगठन, समाज, राष्ट्र व मानवता के नाम पर वेद को नहीं त्यागा क्योंकि वे जानते थे कि वेद है तो सब बचेगा अन्यथा सब पुरुषार्थ निरर्थक हो जायेगा। दुर्भाग्य से प्रारम्भ से ही आर्य समाज इस मूलमंत्र को भूल गया है, इसी कारण ऋषि के स्वप्नों का न तो समाज बना और न राष्ट्र अथवा विश्व। यह भी ध्यातव्य है कि किसी भी विद्या के प्रचार से पूर्व उस विद्या के यथार्थ स्वरूप (विज्ञान) पर गम्भीर अनुसंधान होना अनिवार्य है। जिस देश व समाज ने गम्भीर अनुसंधान को अपनाया, वही विश्व में गुरुपद को प्राप्त कर सका।** जब तक भारत में ऋषि-महर्षि वेद विद्या का गम्भीर अनुसंधान करते रहे। जब तक इस देश में **भगवान् ब्रह्मा, मनु, महादेव शिव, विष्णु, इन्द्र, नारायण, नारद, बृहस्पति, अगस्त्य, भरद्वाज, विश्वामित्र, वसिष्ठ, राम, व्यास, कणाद, कपिल, पतंजलि, कृष्ण जैसे भगवन्त देवपुरुष** वेद विद्या के गम्भीर अनुसंधानकर्ता विज्ञानी थे, **भगवती उमा, गार्गी, लोपामुद्रा, अरुन्धती, अनुसूया, सीता, सावित्री** जैसी अनेकों वेद विज्ञान पारंगता माताएं हुआ करती थीं। उस समय तक ही भारत जगद्गुरु था। उसी समय **सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, अश्वपति, हरिश्चन्द्र, ययाति और भरत** जैसे अनेकों चक्रवर्ती राजा हुए (देखें- सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास)। जैसे ही अनुसंधान व तप की प्रवृत्ति इस देश से चली गयी और केवल वेदपाठी अथवा वेद का नाम लेने वाले रह गये, वैसे ही इस देश का जगद्गुरु व चक्रवर्ती राष्ट्र, ये दोनों पद भी समाप्त हो गये।

मेरे प्यारे आर्यो! अपने **महर्षि दयानन्द जी के दर्द को समझने की प्रयास करो**। जिस दिन यह समाज व राष्ट्र महान् ऋषियों व देवों की गौरव शालिनी परम्परा को समझ जायेगा और इसके विद्वान् व सामाजिक नेतृत्व अनुसंधान की सर्वोच्च्य महत्ता को समझ लेंगे, उस दिन वे उसमें विशेष व्यस्त होकर पारस्परिक राग, द्वेष, लड़ाई-झगड़े करना भूल जायेंगे। इस संसार में चतुर्दिक हमारे शत्रु हैं, उन्हीं से संघर्ष का बल उत्पन्न करो। **पाश्चात्य भोगवादी स्वेच्छाचारिणी प्रवृत्ति, बढ़ता नास्तिकपन, फैशन परस्ती, बढ़ते अन्धविश्वास व पाखण्ड, पश्चिमी दास मनोवृत्ति में फंसी शिक्षा पद्धति, वेद व राष्ट्र का पूर्ण विरोधी वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य, सामाजिक छूआछूत, राजनैतिक आरक्षण रूपी छूआछूत, कट्टर साम्प्रदायिकता, कट्टर जातिवाद, हिंसा, यौनाचार, गो-आदि पशुहत्या का घोर पाप, मनोरंजन के नाम पर अश्लीलता का बढ़ता पाप, आतंकवाद, सांस्कृतिक आतंकवाद, पर्यावरण का घोर प्रदूषण, करोड़ों भारतीयों की गरीबी, अशिक्षा, मिथ्या छल, कपट, अन्याय, अनाचार आदि इतने सारे शत्रुओं के रहते हम परस्पर ही क्यों लड़ने में व्यस्त हैं?** यदि हममें पढ़ने, शोध करने की रुचि बढ़ेगी तो खाली दिमाग शैतान का घर नहीं बनेगा। **हमारे गुरुकुल ऐसी आर्ष शिक्षा प्रणाली के शोध केन्द्र बनें, जो आधुनिक वैज्ञानिकों के तीर्थ बन जायें, यह मेरा स्वप्न है। हाँ, मेरी सामाजिक आयु बहुत कम है, केवल अब सात वर्ष। हाँ, ये सात वर्ष मेरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण वर्ष हैं। इस अवधि में भारत को जगद्गुरु बनाने का मूल मंत्र तो दे ही दूंगा। मेरा ऐतरेय ब्राह्मण व्याख्यान एक ऐसा ग्रन्थ होगा, जिस पर संसार का विकसित विज्ञान कदाचित् आगामी कई दशक तक शोध करे तो, वैदिक विद्या का अकल्पनीय लाभ मिले।** उस समय इस देश को अपने वेदों, ऋषियों व देवों के बारे में किसी से प्रमाण पत्र लेने की आवश्यकता नहीं रहेगी। सम्पूर्ण भूमण्डल स्वयं ही उन्हें वैसे ही अपना लेगा, जैसे महाभारत तक अपनाये था। उसी समय हम सब आर्यजन आनन्द से गा सकेंगे-

ऋषिराज तेज तेरा सब ओर छा रहा है।
तेरे बताये पथ पर संसार आ रहा है।।

अभी यह गीत गाना सार्थक नहीं है **परन्तु इसमें इस देश हिन्दू समाज व विशेषकर आर्य समाज को अत्यन्त पुरुषार्थ करना पड़ेगा अन्यथा यह स्वप्न ही रह जायेगा और मेरी पुस्तक भी किसी अलमारी की शोभा बनकर रह जायेगी, जो किसी की समझ में भी नहीं आयेगी।**

मेरे प्यारे वेदभक्तो! अपनी गिरी हुई दशा पर जरा तो दृष्टि डालो। अपने आत्मा से पूछो कि संसार के विकसित विज्ञान के सम्मुख आप क्या आँख उठाकर देखने का सामर्थ्य रखते हैं? क्या उन्हें अपने वेद से कुछ प्रेरणा दे सकते हैं? जब वेद के स्वरूप का सत्य ज्ञान नहीं तो वेद प्रचार कैसा? **आज विज्ञापनों का युग है। हम वेद का विज्ञापन कर रहे हैं, ऋषियों का विज्ञापन कर रहे हैं, देवी-देवताओं व ऋषि-महर्षियों तथा वैदिक सनातन धर्म की जय के नारे लगा रहे हैं** परन्तु इनमें से किसी का भी कोई गम्भीर ज्ञान अर्जित करने का प्रयास कितने कर रहे हैं? विज्ञापन तो आकर्षक प्रतीत होते हैं परन्तु सामान क्या है, यह मैं पाठकों पर ही छोड़ता हूँ। क्या सभाओं, समाजों, आर्य समाजियों, पौराणिकों, बड़े-२ धर्मगुरुओं व अन्य देश संसार में वेद व ऋषियों पर हो रहे कुठाराघात का कुछ दर्द हमारे दिलों में विद्यमान है? **सोचो, मेरे वेदभक्तो! अपनी भूमिका के बारे में सोचो! मेरे देशभक्तो! विचारो, आप भी विचारो! वेद व ऋषियों को मिटने से देश की संस्कृति, सभ्यता, इतिहास ही नहीं इसकी राजनैतिक अखण्डता भी कालान्तर में मिट जायेगी। यदि आप सब चाहेंगे कि वेद बचे, देश बचे तो बच सकेगा और यदि आपका प्रमाद, पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष, वैर, विरोध इसी तरह रहा तो कुछ भी नहीं बचेगा।** हम सब मिट जायेंगे, लुट जायेंगे। पाश्चात्य कुसभ्यता हम सब को निगल रही है, जो शेष रहा है उसको भी निगल जायेगी और हम ऐसे जड़ हो जायेंगे वा हो गये हैं कि इस रोग को ही दवा वा आनन्द समझ बैठे हैं, तभी तो **हम विनाश पर भी मस्त हैं, सुप्त हैं।** मेरे साथ परमपिता परमात्मा की दया तो है ही, जिसके सहारे ही मैं इस दुर्बोध्य मार्ग पर एकाकी चल रहा हूँ। शास्त्रों के रहस्य स्वतः खुलते जा रहे हैं। हाँ, **यह अवश्य चाहता हूँ कि प्रत्येक ईश्वर भक्त, वेदभक्त, ऋषिभक्त एवं विज्ञान भक्त मेरे साथ रहे तो इस वेद विज्ञान की यात्रा करने में आनंद विशेष आयेगा अन्यथा 'स्वस्ति पन्था मनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव' के अनुसार एकाकी भी सन्तुष्ट होकर चलता ही रहूंगा।** सभी महानुभावों को महाशिवरात्रि तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती बोध दिवस की हार्दिक शुभकामनायें।

।। इत्योम् शम् ।।

विनम्र निवेदन

मान्यवर! आशा है कि आपने इस पुस्तिका को ध्यान से पढ़कर आचार्य जी के कार्य और महत्ता को भली प्रकार समझ लिया होगा, ऐसी आशा करते हैं। यदि आपके हृदय और मस्तिष्क वेद के इस अपूर्व कार्य के लिए उत्सुक हुए हों और हमें अपना सहयोग करना चाहें तो आप हमारे यज्ञ में निम्न प्रकार से सहयोगी बन सकते हैं–

1. प्रतिवर्ष न्यूनतम 12,000/– रूपये अथवा एक बार न्यूनतम एक लाख रूपये का दान करके सहयोगी संरक्षक बन सकते हैं। आपको न्यास की वार्षिक बैठक में जो प्रायः वार्षिकोत्सव के अवसर पर हुआ करेगी, में विशेष अतिथि रूपेण आमन्त्रित किया जाता रहेगा।
2. प्रतिवर्ष न्यूनतम 6,000/– रूपये अथवा एक साथ न्यूनतम 50,000/– रूपये देकर विशेष आमन्त्रित सदस्य बन सकते हैं। आपको भी वार्षिक बैठक के अवसर पर अतिथि रूपेण आमन्त्रित किया जाता रहेगा।

3. वार्षिक न्यूनतम 1,000/– रूपये अथवा एक सौ मासिक देते रहकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं।
4. अपने नाम से कमरा आदि बनवा सकते हैं।
5. अपने किसी परिजन की स्मृति में अथवा यों ही स्थिर निधि में धन जमा करा सकते हैं, जिसके ब्याज का उपयोग न्यास करता रहे। जब तक न्यास ब्याज का उपयोग करेगा तब तक यदि स्थिर निधि सहयोगी संरक्षक वा विशेष आमंत्रित के बराबर है, तो आपको भी उसी श्रेणी का सदस्य माना जायेगा।
   नोट– उपर्युक्त सभी सहयोगी महानुभावों को न्यास की C.A. द्वारा की हुई वार्षिक ऑडिट रिपोर्ट भेजी जाया करेगी। जो महानुभाव स्वयं दान नहीं कर सकें वे दूसरों को प्रेरित करके कम से कम 8 सदस्य आदि बनाकर स्वयं निःशुल्क उसी श्रेणी के सदस्य वा सहयोगी संरक्षक आदि बन सकते हैं।
6. वयोवृद्ध विद्वान्, संन्यासी, साधु, महान् वैज्ञानिक महानुभाव अपना आर्शीवाद तथा बौद्धिक सहयोग दे सकते हैं।
7. विद्यार्थी, किसान, श्रमिक, व्यापारी आदि अपनी पवित्र आहुति श्रद्धा व सामर्थ्य के अनुसार सहयोग कर सकते हैं। आई. आई. टी., इंजीनियरिंग व विज्ञान के उच्च शिक्षा वा शोध स्तर के छात्र अपना बौद्धिक सहयोग भी दे सकते हैं।

विशेष निवेदन

यह कार्य अत्यन्त पवित्र है, इस कारण आचार्य श्री की भावनानुसार विनम्र निवेदन है कि **जिनकी आजीविका किसी भी प्रकार की हिंसा, चोरी, तस्करी, अश्लीलतावर्धक साधनों, नशीली वस्तुओं की विक्री, धोखाधड़ी, शोषण आदि पर निर्भर हो तथा जो निर्धन भाई अपनी सामर्थ्य से अधिक (अथवा अपने परिवार में क्लेश करके) दान देना चाहते हों, ऐसे महानुभावों की सद्भावना का धन्यवाद करते हुए भी हम उनका दान लेने में असमर्थ हैं। कृपया ऐसा करने का प्रस्ताव करके हमें लज्जित न करें। हाँ, जो बन्धु ऐसे कर्मों को त्यागकर हमसे जुड़ना चाहें, तो उनका हार्दिक स्वागत है।**

कृपया आप अपना चैक/ड्राफ्ट/धनादेश, "**प्रमुख, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास**" **PAN No. AAATV7229A** के नाम (केवल खाते में देय) भेजने का कष्ट करें, साथ ही अपना नाम व पता साफ अक्षरों में लिखकर अवश्य भेजने की कृपा करें। **पंजाब नैशनल बैंक, शाखा– भीनमाल, IFS Code : PUNB0447400, खाता सं.– 4474000100005849 अथवा स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर, शाखा– भीनमाल, खाता सं– 61001839825** में ऑन लाइन भी आप धन जमा करवा सकते हैं परन्तु ऐसा करने वाले **महानुभाव अपना नाम व पता दूरभाष द्वारा तत्काल सूचित करने का कष्ट करें**, जिससे समय पर रसीद भेजी जा सके, अन्यथा हमें बहुत कठिनाई होती है।

नोट– न्यास को दिया हुआ दान आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।